भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग

राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 3206

दिनांक 20/03/2026

मौसम सहनीय आम की किस्मों के लिए अनुसंधान और विकास पहल

3206. डॉ. अजित माधवराव गोपछड़े:

क्या **कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार इस बात से अवगत है कि हाल के वर्षों में आम के चरम मौसम के दौरान बेमौसम और समय से पहले हुई वर्षा ने आम की उत्पादकता और गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है, यदि हां, तो इस संबंध में क्या आकलन किया गया है;

(ख) क्या सरकार ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के समन्वय से मौसम सहनीय और बेमौसम आम की किस्मों को विकसित करने के लिए अनुसंधान और विकास संबंधी पहल की है; और

(ग) क्या बेमौसम वाले आम की खेती की पद्धतियों को विकसित और बढ़ावा देने के लिए कोई समर्पित अनुसंधान केंद्र, फील्ड परीक्षण या पायलट परियोजनाएं प्रारंभ की गई हैं, यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर
कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री
(श्री भागीरथ चौधरी)

(क) : बेमौसम और अगेती वर्षा होने से देश में आम की खेती वाले विभिन्न क्षेत्रों में आम की उपज में पर्याप्त नुकसान होता है। आम की फसल में समुचित पुष्पन और फल विकास के लिए शुष्क मौसम का होना जरूरी होता है। पुष्पन के दौरान होने वाली वर्षा से परागकों की गतिविधि बाधित होती है जिससे आम की फसल में खराब फल जमाव को बढ़ावा मिलता है। उच्च आर्द्रता और नमी परिस्थिति भी एंथ्रेक्नोज, चूर्णिल मिल्ड्यू तथा पुष्प अंगमारी जैसे रोगों को बढ़ावा देती है जिससे उपज में भारी कमी आती है। अगेती वर्षा के कारण नाशीजीव का संक्रमण भी बढ़ता है।

प्रायोगिक अध्ययनों में बारिश की तीव्रता, समय और अवधि पर निर्भर करते हुए विभिन्न क्षेत्रों के बीच नुकसान की मात्रा के साथ-साथ प्रभावित किस्म और बेमौसम तथा अगेती वर्षा के प्रभाव का पता चला। आम के उत्पादन पर बेमौसम और अगेती वर्षा के प्रभाव को नियंत्रित करने के लिए सुधारात्मक उपायों में शामिल हैं :

- संस्तुत कवकनाशियों और कीटनाशकों का समय से प्रयोग करना
- पुष्पन और फल बने रहने में सुधार के लिए बढ़वार नियामकों का उपयोग करना
- फलों की थैलाबंदी को अपनाना और फल मक्खी ट्रैप को लगाना
- उन्नत वायु संचरण के लिए समुचित प्रूनिंग और कैनोपी अथवा वितान प्रबंधन
- जल-भराव को रोकने के लिए फलोद्यान में जल निकासी में सुधार करना
- पर्यावरण-अनुकूल एवं वानस्पतिक पादप सुरक्षा उपायों को प्रोत्साहन देना

(ख) : भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अनेक संस्थानों और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों (SAUs) द्वारा आम की फसल में जलवायु-अनुकूल किस्मों और प्रौद्योगिकियों पर कार्य किया जा रहा है। आम की विकसित की गईं कुछ जलवायु-अनुकूल किस्मों में शामिल हैं : भाकृअनुप-भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान (ICAR-IIHR), बेंगलुरू द्वारा अर्का उदय एवं अर्का सुप्रभात; भाकृअनुप-केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान (ICAR-CISH), लखनऊ द्वारा सीआईएसएच अरूणिका तथा अवध अभय; तथा भाकृअनुप-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR-IARI), नई दिल्ली द्वारा पूसा अरूणिमा एवं पूसा श्रेष्ठा। *ट्राइकोडर्मा* का उपयोग करते हुए जीवाणिक नियंत्रण उपाय के साथ सीआईएसएच आम अच्छी कृषि प्रथा (जीएपी) जैसी जलवायु-अनुकूल प्रौद्योगिकी से जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से बचने में मदद मिल रही है। आम की फसल में बेमौसम पुष्पन के लिए कैनोपी अथवा वितान प्रबंधन और पादप बढ़वार नियामकों का उपयोग करने की सिफारिश की गई है। ऋतु विज्ञान अथवा फेनोलॉजिकल अध्ययनों से पता चला है कि नीलम, कालेपाड़ और तोतापुरी किस्मों ने दक्षिण भारत की परिस्थितियों में बेमौसम पुष्पन और फलन दिया है। लवणता के प्रति सहनशील मूलवृंतों के साथ जलवायु-अनुकूल किस्में और प्रौद्योगिकियां विकसित करने पर और अधिक अनुसंधान किया जा रहा है।

(ग) : हालिया अतीत में, आंध्र प्रदेश (रॉयल स्पेशल/पुनासा), तमिलनाडु (कुरूक्कन एवं नीलम), गोवा व गुजरात (बजरंग) में बहु-मौसम पुष्पन और फलन देने वाली किस्मों की पहचान करने, उनका संकलन एवं संरक्षण करने हेतु प्रयास किए गए हैं ताकि ऑफ-सीज़न (सितम्बर-फरवरी) के दौरान अच्छा बाजार मूल्य हासिल किया जा सके। अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह से भी बहु-सीज़न पुष्पन देने वाली स्थानीय प्राप्तियों की सूचना मिली है।

राष्ट्रीय कृषि नवाचार परियोजना (NIAP), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सहयोग से ''विभिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों में आम की फसल में बेमौसम पुष्पन और फलन की क्रियाविधि को समझना'' पर एक अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत कन्याकुमारी क्षेत्र में ऑफ-सीज़न उत्पादन के लिए 10 आशाजनक ऑफ-सीज़न क्लोन, 6 व्यावसायिक किस्में और 4 किसान किस्मों की पहचान की गई।

******